हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं

अध्याय 1

त्रिएकता में

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्बितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय...1
पुराना नियम 2
आत्मा...3
ईश्वरत्व..4
स्वयं परमेश्वर 4
भविष्यवाणी और दर्शन 6
विशेष प्रवीणता और ज्ञान 7
अभिषेक और सामर्थ्य..7
व्यक्तित्व 9
मनोभाव 10
संबंध 10
अधिकार...10
इच्छाशक्ति...11
नया नियम...11
यीशु..12
प्रेरित...14
कलीसियाई इतिहास...16
प्रेरितों का विश्वास-कथन 16
त्रिएकता की धर्मशिक्षा..17
नाईसीन विश्वास-कथन..18
सत्ता मीमांसा और विधान...19
उपसंहार..21

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं

अध्याय एक

त्रिएकता में

परिचय

मैंने एक बार एक ऐसे व्यक्ति की कहानी सुनी थी जिसने एक दुर्घटना में घायल होकर अपनी याददाश्त खो दी थी। वह अपने जीवन के हर विवरण को भूल गया था : अपना नाम, अपने मित्रों और यहाँ तक अपने परिवार को भी। उसके घावों को ठीक होने में महीनों लग गए। और उस समय के दौरान एक विशेष नर्स ने उसकी बहुत विश्वासयोग्यता के साथ सेवा की। पहले पहल, वह उसे केवल "नर्स" के रूप में जानता था। पर जल्दी ही उसे उसके नाम का पता लगा, और फिर उसकी समय-सारणी का और फिर उसके व्यक्तित्व का। वह उसकी परवाह करने लगा, और वे अक्सर हँसते और बातें करते हुए अपना समय बिताने लगे। एक दिन, ऐसी ही एक मुलाकात के दौरान उस व्यक्ति की याददाश्त लौट आई, और उसने अचानक उस नर्स को पहचान लिया। अपनी प्रसन्नता में वह चिल्लाया, "तुम मुझे याद हो। तुम मेरी पत्नी हो!" और निस्संदेह वह उसकी पत्नी थी।

कुछ रूपों में यह कहानी पवित्र आत्मा और परमेश्वर के लोगों से थोड़ी-बहुत मिलती जुलती है। परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने सदैव लोगों से प्रेम किया और विश्वासयोग्यता के साथ उनकी देखभाल की है। परंतु पुराने नियम में वे यह भी नहीं जानते थे कि वह कौन है। नए नियम में आकर ही यीशु मसीह ने त्रिएकता के एक भिन्न व्यक्तित्व के रूप में पवित्र आत्मा को प्रकट करना शुरू किया।

यह *हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं* की हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय है। और हमने इसका शीर्षक "त्रिएकता में" दिया है। इस अध्याय में हम परमेश्वरत्व के पूर्ण और समान सदस्य के रूप में पवित्र आत्मा पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

विधिवत धर्मविज्ञान में पवित्र आत्मा की धर्मशिक्षा का उल्लेख "न्यूमैटोलोजी" या "पवित्र आत्मा विज्ञान" के रूप में किया जाता है। शब्द "न्यूमैटोलोजी" दो यूनानी मूल शब्दों से लिया गया है : *न्यूमा,* अर्थात् "आत्मा," और *लोगोस,* अर्थात् "अध्ययन।" अतः "न्यूमैटोलोजी," मोटे तौर पर, "आत्माओं के अध्ययन" या "आत्मिक बातों के अध्ययन" को दर्शाता है। परंतु मसीही धर्मविज्ञान में "न्यूमैटोलोजी" का एक काफी संकीर्ण अर्थ है। विशेष रूप से, यह त्रिएकता के तीसरे व्यक्तित्व, अर्थात् "पवित्र आत्मा के अध्ययन" को दर्शाता है।

ऐतिहासिक रूप में, त्रिएकता के एक अलग, असृजित व्यक्तित्व के रूप में पवित्र आत्मा की धर्मशिक्षा को विकसित होने में एक सहस्त्राब्दी लगी है। इसका मुख्य कारण यह है कि परमेश्वर ने समय के साथ अपने अस्तित्व के इस पहलू को प्रकट करने का चुनाव किया। और जब परमेश्वर ने स्वयं को अधिक से अधिक प्रकट किया, तो हमने उसके त्रिएक्य स्वभाव की और अधिक समझ को विकसित करना शुरू किया। पारंपरिक रूप से, विधिवत धर्मविज्ञानियों ने यह कहते हुए त्रिएकता को परिभाषित किया है :

> परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व हैं, परंतु केवल एक सार है।

"व्यक्तित्व" से हमारा अर्थ एक अलग, स्व-जागरूक व्यक्तित्व है। और शब्द "सार" से हमारा अर्थ परमेश्वर का वह अस्तित्व, उसका मूलभूत स्वभाव, या वह तत्व है जो उसमें पाया जाता है।

त्रिएकता की धर्मशिक्षा का संकेत पुराने नियम में दिया गया था, परंतु केवल पिता के व्यक्तित्व को ही बहुत ही स्पष्टता के साथ अभिव्यक्त किया गया था। नए नियम में त्रिएकता के तीनो व्यक्तित्वों को पूरी तरह से प्रकट किया गया : पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा। और एक दूसरे के साथ उनके संबंध की

प्रकृति को भी परिभाषित किया गया। अंततः आरंभिक कलीसिया में उन सब विवरणों को ऐसी धर्मवैज्ञानिक धर्मशिक्षाओं में प्रतिपादित किया गया जिन्हें मसीहियों ने तब से ग्रहण किया है।

त्रिएकता में पवित्र आत्मा के अस्तित्व पर आधारित इस अध्याय में हम न्यूमैटोलोजी के ऐतिहासिक विकास की खोज तीन चरणों में करेंगे। पहला, हम देखेंगे कि पुराने नियम में पवित्र आत्मा कैसे पाया जाता है। दूसरा, हम देखेंगे कि नया नियम उसके बारे में क्या सिखाता है। और तीसरा, हम कलीसिया के इतिहास में पवित्र आत्मा की औपचारिक धर्मशिक्षा पर चर्चा करेंगे। आइए पहले देखें कि पुराने नियम में पवित्र आत्मा कैसे पाया जाता है।

पुराना नियम

अब, हम जानते हैं कि परमेश्वर हमेशा से त्रिएकता में अस्तित्व में रहा है। और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच व्यक्तिगत भिन्नताएँ उसके विषय में हमेशा सच्ची रही हैं। ये तीनों व्यक्तित्व हमेशा से, और वर्तमान में भी असृजित और पूर्णतः परमेश्वर हैं। परंतु पुराने नियम के समय के दौरान परमेश्वर के लोगों ने यह नहीं समझा कि परमेश्वर तीन व्यक्तित्वों में था। वे उसे एकमात्र सच्चे परमेश्वर के रूप में जानते थे और वैसे ही उसकी आराधना करते थे। निस्संदेह हम पूरे पुराने नियम में इन बातों के संकेत देख सकते हैं कि पवित्र आत्मा एक अलग व्यक्तित्व है। परंतु नए नियम की स्पष्टता के कारण ही हम इन संकेतों को समझ सकते हैं।

सन् 1851–1921 के बीच रहे बीसवीं सदी के धर्मविज्ञानी बी. बी. वॉरफील्ड ने पुराने नियम की तुलना एक ऐसे कमरे के रूप में की जो सजाया तो बहुत अच्छे से गया था पर उसमें रौशनी बहुत कम थी। उसने कहा कि जब हम वहाँ बेहतर रौशनी को लाते हैं तो वह उसे नहीं बदलता जो उस कमरे में है। यह हमें उन वस्तुओं को देखने में समर्थ बनाता है जो पहले से वहाँ थीं। सुनें किस प्रकार वॉरफील्ड ने 1915 में प्रकाशित अपनी पुस्तक *दी बिबलिकल डॉक्ट्रिन* में त्रिएकता पर इस विचार को लागू किया :

> पुराने नियम में त्रिएकता के भेद को प्रकट नहीं किया गया है; परंतु त्रिएकता का भेद पुराने नियम के प्रकाशन में स्थापित है, और यहाँ वहाँ दिखाई देता है। इस प्रकार परमेश्वर के पुराने नियम के प्रकाशन को इसके बाद आए बड़े प्रकाशन के द्वारा सुधारा नहीं जाता, बस केवल उसे पूर्ण, विस्तृत और बड़ा किया जाता है।

परमेश्वर ने पुराने नियम में स्वयं को त्रिएकता के रूप में प्रकट नहीं किया — कम से कम ऐसे रूप में तो नहीं कि उसके लोग स्पष्टता से समझ सकें। फिर भी, क्योंकि परमेश्वर वास्तव में त्रिएकता में वास करता है, और क्योंकि पुराना नियम उसे वास्तव में प्रकट करता है, इसलिए पुराने नियम में त्रिएकता के विषय में प्रमाण पाए जाते हैं। और जब हम पुराने नियम को उस अंतर्दृष्टि के साथ पढ़ते हैं जिसे हम नए नियम से प्राप्त करते हैं, तो हम इन प्रमाणों को और अधिक स्पष्टता से देख सकते हैं।

> अतः पुराना नियम हमें उद्धारकर्ता, अर्थात् मसीहा के आगमन की तैयारी में किए जानेवाले परमेश्वर के कार्य की कहानी बताता है। और यह इसे परमेश्वर के कार्य का वर्णन परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, और परमेश्वर के पुत्र के माध्यम से करने के द्वारा करता है, उदाहरण के लिए भजन 2 के समान। और इसलिए, आप पूरे पुराने नियम में एक परिचय को देखते हैं, न केवल परमेश्वर के नाम का बल्कि उसके नाम के साथ जुड़े उसके कार्य का भी। परंतु जब परमेश्वर कार्य करता है, तो वह लेख में कई रूपों में कार्य करता है। अतः भजन 33 में उसके पुत्र के या उसके

> वचन के या उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर के कार्य करने के तरीके में उसके एक से अधिक होने से संबंधित भाषा परमेश्वरत्व में एक से अधिक व्यक्तित्वों के होने के विचार का परिचय देती है, और उसमें स्पष्टता की आवश्यकता भी नहीं है। नया नियम वहीं से शुरू होता है जहाँ पुराना नियम समाप्त होता है। यह परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु मसीह में परमेश्वर के कार्य पर ध्यान केंद्रित करता है, और यीशु के बपतिस्मा के समय पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सब एक साथ प्रकट होते हैं। अतः ऐसा कोई आदर्शवाद भी नहीं है जहाँ ये केवल ऐसे नाम हैं जिन्हें उसी व्यक्ति या उसी मनुष्य के साथ जोड़ा जाता है। पिता और पुत्र और आत्मा अलग-अलग व्यक्तित्व हैं, और नया नियम उन सारे शब्दों को और पुराने नियम में प्रतिज्ञा किए गए परमेश्वर के कार्य को लेकर उसे पूर्णता में ला सकता है, इसलिए परमेश्वर के विचारों और उसके कार्य और परमेश्वर के नाम तथा साथ ही साथ पुत्र और आत्मा का परिचय देने के द्वारा वे साथ कार्य करते हैं और फिर नया नियम हमें त्रिएकता की धर्मशिक्षा प्रदान करने के लिए पूर्णता में इसे एक साथ लेकर आता है।
>
> — डॉ. स्टीव मैक्किनियन

पुराने नियम में पवित्र आत्मा के विषय में अध्ययन करने के कई तरीके हैं। परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए, हम परमेश्वर के आत्मा के पुराने नियम के उल्लेखों पर ध्यान देंगे, और इस पर भी कि कैसे वे उल्लेख आत्मा के ईश्वरत्व, और उसके व्यक्तित्व को दर्शाते हैं। आइए हम परमेश्वर के आत्मा के विषय में पुराने नियम के कुछ उल्लेखों को देखें।

आत्मा

पुराना नियम परमेश्वर के आत्मा के लिए कई शब्दों का प्रयोग करता है, जैसे “पवित्र आत्मा," “परमेश्वर का आत्मा,” “प्रभु का आत्मा,” और कई बार जब परमेश्वर बोल रहा होता है तो “मेरा आत्मा।” पुराने नियम में “आत्मा” के रूप में जिस इब्रानी शब्द का हम अनुवाद करते हैं, वह *रूआख* है। सामान्य शब्दों में, *रूआख* कई बातों को दर्शा सकता है। यह हवा या श्वास हो सकता है। जानवरों में, यह जीवन का सिद्धांत हो सकता है जो उन्हें जीवित रखता है। मनुष्यों में, हमारा *रूआख* हमारा अनश्वर प्राण है। *रूआख* उन आत्माओं को भी दर्शा सकता है जिनके पास भौतिक देह नहीं होती। परंतु जब परमेश्वर के बारे में इसका प्रयोग किया जाता है, तो यह सामान्यतः परमेश्वर का पर्यायवाची होता है, या यह उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति और सृष्टि के साथ उसकी सहभागिता को दर्शाता है।

“परमेश्वर का आत्मा,” “मेरा आत्मा,” और “यहोवा का आत्मा” जैसे नामों में *रूआख* को परमेश्वर के नाम या सर्वनाम के साथ जोड़ा जाता है जो दर्शाता है कि परमेश्वर का आत्मा किसी न किसी रूप में परमेश्वर के साथ जुड़ा हुआ है, या वह वास्तव में परमेश्वर है। और पुराने नियम का “पवित्र आत्मा” नाम *रूआख* को इब्रानी शब्द *कादेश,* अर्थात् “पवित्रता” के साथ जोड़ता है। परमेश्वर का *कादेश* या “पवित्रता” उसका “अन्य-पन” या “अलग-पन” है — अर्थात् अपनी सृष्टि से भिन्न होने का उसका गुण। इसमें उसकी परम नैतिक शुद्धता, और साथ ही साथ उसके स्वरूप के वैभव जैसी बातें शामिल होती हैं। इसी शब्द का प्रयोग परमेश्वर के अन्य नामों के लिए भी किया गया है, जैसे “पवित्र” जिसे हम 2 राजाओं 19:22, यशायाह 30:11-15, और होशे 11:9-12 जैसे स्थानों पर देखते हैं।

मसीहियों के लिए यह सोचना लुभावना हो सकता है कि पुराने नियम के ये नाम त्रिएकता के तीसरे व्यक्तित्व की ओर सीधा-सीधा संकेत करते हैं। परंतु हमें यह याद रखने की जरूरत है कि परमेश्वर ने नए

नियम के प्रकाशन तक तीन व्यक्तित्वों में अपने अस्तित्व को स्पष्ट नहीं किया था। अतः पुराने नियम में ये नाम परमेश्वर को उसके व्यक्तित्वों के बीच स्पष्ट अंतर के बिना ही दर्शाते हैं। फिर भी, इन नामों ने परमेश्वर के लोगों को नए नियम में त्रिएकता के विषय में सीखने में सहायता की हैं। और नए नियम की शिक्षा के संदर्भ में धर्मविज्ञानियों ने आम तौर पर इन उल्लेखों को पवित्र आत्मा के स्वभाव और कार्य पर लागू किया है।

परमेश्वर के आत्मा के कुछ पुराने नियम के नामों को देख लेने के बाद आइए देखें कि कैसे ये नाम आत्मा के ईश्वरत्व को दर्शाते हैं।

ईश्वरत्व

जब हम पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व के बारे में बात करते हैं तो हमारा अर्थ यह है कि आत्मा वास्तव में असृजित परमेश्वर है, और परमेश्वर का कोई एक दूत नहीं है। और जैसा हमने कहा है, परमेश्वर के आत्मा के पुराने नियम के उल्लेख कभी-कभी स्वयं परमेश्वर को दर्शाते हैं, और कभी-कभी सृष्टि के साथ उसकी सहभागिता का वर्णन करते हैं। परंतु इन दोनों ही संदर्भों में वे अनंत, असृजित ईश्वरत्व की ओर संकेत करते हैं।

हम पुराने नियम में परमेश्वर के आत्मा के चार गुणों को देखेंगे जो उसके ईश्वरत्व की ओर अगुवाई करते हैं, आइए पहले उन उल्लेखों के साथ आरंभ करें जो आत्मा को स्वयं परमेश्वर की समानता में दिखाते हैं।

स्वयं परमेश्वर

आइए सबसे पहले यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा लिखे अनुच्छेद को देखें। परमेश्वर द्वारा इस्राएल को बचाने और छुड़ाने के तरीकों का वर्णन करने के बाद यशायाह ने उस तरीके की आलोचना की जिसमें उन्होंने परमेश्वर को प्रत्युत्तर दिया था। सुनिए यशायाह 63:10 में उसने क्या लिखा :

> उन्होंने बलवा किया और उसके पवित्र आत्मा को खेदित किया; इस कारण वह पलटकर उनका शत्रु हो गया, और स्वयं उन से लड़ने लगा (यशायाह 63:10)।

यशायाह ने पवित्र आत्मा नाम को स्वयं परमेश्वर पर लागू किया, शायद इस बात पर बल देने के लिए कि परमेश्वर की पवित्रता ने ही उसे उनके पाप के कारण उनसे लड़ने पर विवश किया। यह पवित्र आत्मा को शोकित करने के समान है जिसकी चेतावनी पौलुस ने इफिसियों 4:30 में दी थी। और प्रत्युत्तर में, परमेश्वर ने अपने लोगों के विरुद्ध लड़ाई करके उन्हें दंड दिया। सुनिए किस प्रकार यशायाह ने 63:11-14 में अपनी बात को जारी रखा :

> तब उसके लोगों को उनके प्राचीनकाल अर्थात् मूसा के दिन स्मरण आए, वे कहने लगे कि जो अपनी भेड़ों को उनके चरवाहे समेत समुद्र में से निकाल लाया वह कहाँ है? जिसने उनके बीच अपना पवित्र आत्मा डाला ... जिसने अपने प्रतापी भुजबल को मूसा के दाहिने हाथ के साथ कर दिया, जिसने उनके सामने जल को दो भाग करके अपना सदा का नाम कर लिया, जो उनको गहिरे समुद्र में से ले चला ... वह कहाँ है? ... यहोवा के आत्मा ने उनको विश्राम दिया। इसी प्रकार से तू ने अपनी प्रजा की अगुवाई की ताकि अपना नाम महिमायुक्त बनाए (63:11-14)।

यशायाह ने उन आश्चर्यकर्मों की ओर संकेत किया जो परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र के हाथों छुड़ाने के समय किए थे। इनमें लाल समुद्र को बाँटना, इस्राएल को सुरक्षित पार उतारना और फ़िरौन की सेना को उसमें डुबाना शामिल था। इन आश्चर्यकर्मों का वर्णन निर्गमन 14, 15 में किया गया है। निर्गमन 15:3-6 में मूसा ने लिखा :

> यहोवा योद्धा है; उसका नाम यहोवा है। फ़िरौन के रथों और सेना को उसने समुद्र में फेंक दिया ... हे यहोवा, तेरा दाहिना हाथ शक्ति में महाप्रतापी हुआ; हे यहोवा, तेरा दाहिना हाथ शत्रु को चकनाचूर कर देता है (निर्गमन 15:3-6)।

यहाँ यह स्पष्ट है कि स्वयं यहोवा ने ये आश्चर्यकर्म किए। अतः जब यशायाह 63 में यशायाह ने उन्हें परमेश्वर के "पवित्र आत्मा" और "यहोवा के आत्मा" के साथ जोड़ा तो उसका उद्देश्य था कि उसके मूल पाठक इन नामों को स्वयं परमेश्वर के नामों के रूप में समझें।

इसके अतिरिक्त, जब मूसा ने परमेश्वर के "दाहिने हाथ" के विजय प्राप्त करने के बारे में बात की, तो वह उपमा संबंधी भाषा का प्रयोग कर रहा था जिसने परमेश्वर की तुलना मानवीय योद्धा से की। और उसका तर्क था कि स्वयं परमेश्वर ने प्रत्यक्ष रूप से युद्ध में प्रवेश करके युद्ध जीत लिया था। इसी प्रकार, जब यशायाह ने बाद में परमेश्वर के आत्मा की तुलना परमेश्वर की भुजा से की, तो उसका अर्थ था कि स्वयं परमेश्वर अदृश्य रूप में एक योद्धा के रूप में विद्यमान था और अपने लोगों के लिए लड़ रहा था।

और कुछ ऐसा ही "परमेश्वर के आत्मा" नाम पर भी अक्सर लागू होता है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 1:2 में सृष्टि के समय परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था। अय्यूब 33:4 में परमेश्वर का आत्मा मनुष्यों का सृष्टिकर्ता है। और भजन 106:32, 33 में वह ऐसा परमेश्वर यहोवा है जिसके विरुद्ध इस्राएलियों ने मरीबा के सोते पर बलवा किया। इन और अन्य कई स्थानों पर संदर्भ परमेश्वर के आत्मा को स्वयं परमेश्वर के साथ पहचानता और समानता में रखता है।

> पवित्र आत्मा की गतिविधियों के द्वारा, जिनके बारे में हम पुराने नियम में पढ़ते हैं, हम निश्चित हो जाते हैं कि वह परमेश्वर है। उदाहरण के लिए, सृष्टि की रचना में उसकी भूमिका : उत्पत्ति 1 में मूसा ने कभी नहीं लिखा कि पवित्र आत्मा की रचना की गई। इसके विपरीत, उसने कहा कि परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था। विचार यहाँ यह है कि वह सृष्टि को वैसे गले लगा रहा था जैसे एक पक्षी अपने बच्चों को गले लगाता है, और वह सृष्टि को जीवन और शक्ति प्रदान कर रहा था। यही विचार भजन 104 में पाया जाता है, जो कहता है, "फिर तू अपनी ओर से [आत्मा] भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं;." पवित्र आत्मा में सृष्टि करने की सामर्थ्य है, और यह प्रमाणित करता है कि वह स्वयं परमेश्वर है।
>
> — रेव्ह. डॉ. एमाद ए. मीखाइल, अनुवाद

और यही बात एक सामान्य नाम "परमेश्वर" के स्थान पर परमेश्वर के वाचाई नाम "यहोवा" का इस्तेमाल करके "परमेश्वर के आत्मा" के नाम पर लागू होती है। जैसा कि हमने अभी देखा, यशायाह 63:14 में परमेश्वर की ओर संकेत करने के अतिरिक्त यह मीका 2:7 में और अन्य कई अनुच्छेदों में भी उसी की ओर संकेत करता है।

और सामान्य शब्द "मेरा आत्मा" भी सीधे-सीधे स्वयं परमेश्वर को ही दर्शाता है। उत्पत्ति 6:3 में यह परमेश्वर के मनुष्यजाति के साथ विवाद के बारे में बात करता है। और हाग्गै 2:5 में परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा अपने वाचाई लोगों के बीच बने रहने की बात की।

एक दूसरा तथ्य जो पुराने नियम में परमेश्वर के आत्मा के ईश्वरत्व की संकेत करता है, वह यह कि आत्मा ने भविष्यवाणी और दर्शनों के लिए सामर्थ्य प्रदान की।

भविष्यवाणी और दर्शन

जब परमेश्वर के आत्मा ने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को प्रेरित किया, तो उसने अक्सर ऐसे ज्ञान को प्रकट किया जो केवल परमेश्वर के पास होता था। और उसने परमेश्वर की ओर से बोलने के लिए भविष्यवक्ताओं को भी अधिकार प्रदान किया। और कुछ विषयों में परमेश्वर के आत्मा ने असाधारण रूपों में मानवीय भविष्यवक्ताओं की आत्माओं को भी नियंत्रित किया, यह नए नियम में पवित्र आत्मा के भविष्यवाणी के दान से बहुत ही मिलता-जुलता है। इन सब परिस्थितियों में यह निष्कर्ष निकालना तर्कपूर्ण है परमेश्वर का आत्मा वास्तव में स्वयं परमेश्वर था।

आत्मा के ईश्वरीय अधिकार और सामर्थ्य को इस रीति से 1 शमूएल 19:20-24 में दर्शाया गया है, जहाँ शाऊल और उसके लोगों को अस्थाई रूप से भविष्यवाणी का दान दिया गया था। 2 इतिहास 24:20 में भी यह स्पष्ट है जहाँ भविष्यवक्ता जकर्याह को परमेश्वर की ओर से उसके वचनों को बोलने की सामर्थ्य दी गई। और यह यहेजकेल 11:24 में भी स्पष्ट है जहाँ परमेश्वर के आत्मा ने यहेजकेल को भविष्यवाणिय दर्शन प्रदान किया।

परंतु परमेश्वर के आत्मा का एक सबसे अधिक नाटकीय कार्य गिनती की पुस्तक में दुष्ट भविष्यवक्ता बिलाम के साथ घटित हुआ। गिनती 22–24 में बिलाम इस्राएल के शत्रु और मोआब के राजा बालाक की ओर से उन्हें शाप देने के लिए तैयार था। परंतु बिलाम ने स्वीकार किया कि वह इस्राएल को तभी शाप दे सकता है जब यहोवा उसे उसकी अनुमति दे। और बालाक तथा बिलाम के अभिप्रायों के विपरीत बिलाम इस्राएल के लिए केवल आशीषों के वचन ही कह सका। परमेश्वर ने बिलाम को इतना अभिभूत कर दिया कि भविष्यवक्ता वह कुछ नहीं बोल पाया जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने नहीं दी थी। गिनती 24:2-4 में हम परमेश्वर के आत्मा के साथ बिलाम की भेंट के इस विवरण को देखते हैं :

> और बिलाम ने आँखें उठाईं, और इस्राएलियों को अपने गोत्र गोत्र के अनुसार बसे हुए देखा। और परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा। तब उसने अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, "बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है ... ईश्वर के वचनों का सुननेवाला, जो ... सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है (गिनती 24:2-4)।

परमेश्वर के आत्मा ने बिलाम को सर्वशक्तिमान की ओर से परमेश्वर के वचन और एक दर्शन प्रदान किया। इससे स्पष्ट होता है कि बिलाम इस्राएल को शाप देने में क्यों विफल रहा — स्वयं परमेश्वर ने वे वचन प्रदान किए जो बिलाम को बोलने पड़े।

"परमेश्वर के आत्मा" के समान "यहोवा का आत्मा" भी भविष्यवाणियों का स्रोत था, जो दर्शाता है कि यह नाम भी प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर की ओर संकेत करता है। गिनती 11:29 में मूसा ने प्रकट किया कि भविष्यवाणी के उसके अपने दान, और अन्य इस्राएली भविष्यवक्ताओं के दानों का स्रोत यहोवा का आत्मा था। यहेजकेल 11:5 में यहोवा के आत्मा ने भविष्यवक्ता यहेजकेल के मुँह में परमेश्वर के वचनों को डाला। और अपनी मृत्यु से पहले दाऊद के अंतिम शब्द यहोवा की आत्मा को स्वयं इस्राएल के परमेश्वर के तुल्य ठहराते हैं : सुनिए 2 शमूएल 23:2-3 में दाऊद ने क्या कहा :

> यहोवा का आत्मा मुझ में होकर बोला, और उसी का वचन मेरे मुँह में आया। इस्राएल के परमेश्वर ने कहा है, इस्राएल की चट्टान ने मुझ से बातें की हैं... (2 शमूएल 23:2-3)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

यहाँ दाऊद के काव्य की समानांतर बातें सुझाव देती हैं कि यहोवा का आत्मा और इस्राएल का परमेश्वर एक ही हैं।

अंत में, स्वयं परमेश्वर ने "मेरा आत्मा" नाम का प्रयोग अंत के दिनों में सब लोगों पर भविष्यवाणी के आत्मिक वरदान को उंडेलने का वर्णन करने में किया। योएल 2:28-29 में परमेश्वर ने यह कहा :

> मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा; तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा (योएल 2:28-29)।

प्रेरितों के काम 2:1-29 में प्रेरित पौलुस ने सिखाया कि यह भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब परमेश्वर ने पिंतेकुस्त के दिन कलीसिया पर पवित्र आत्मा को उंडेला। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के आत्मा के विषय में योएल का पुराने नियम का उल्लेख अंततः पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व को दर्शाता है। फिर से, इसका अर्थ यह नहीं कि योएल की भविष्यवाणी ने स्पष्ट रूप से त्रिएकता के तीसरे व्यक्तित्व के अस्तित्व की घोषणा की। परंतु इसका अर्थ यह अवश्य है कि योएल की भविष्यवाणी में आत्मा कोई और नहीं बल्कि स्वयं परमेश्वर है।

पुराने नियम की तीसरी विशेषता जो परमेश्वर के आत्मा के ईश्वरत्व की ओर संकेत करती है, वह यह है कि उसने कुछ चुनिंदा मनुष्यों को विशेष प्रवीणता और ज्ञान प्रदान किया।

विशेष प्रवीणता और ज्ञान

पुराने नियम में परमेश्वर के आत्मा ने अलौकिक रूप से कुछ मनुष्यों को सेवकाई का कार्य करने के लिए दान प्रदान किए। उदाहरण के लिए, निर्गमन 31:3 और 35:31 में परमेश्वर ने बसलेल और ओहोलीआब नामक कारीगरों को अपने आत्मा से भर दिया ताकि वे मिलापवाले तंबू और उसकी साज-सजावट को बना सकें। विचार यह था कि परमेश्वर ने उन्हें यह आश्वस्त करने के लिए बड़ी योग्यताएँ और ज्ञान प्रदान किया ताकि उनके कार्य परमेश्वर को प्रसन्न करें। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण था क्योंकि निर्गमन 25:9, 40 के अनुसार कारीगरों को पृथ्वी के मिलापवाले तंबू को स्वर्गीय तंबू के समान बनाना था। इसलिए उनके पास इस कार्य को पूरा करने के लिए कारीगरी से संबंधित पर्याप्त प्रवीणता और ज्ञान होना था, जैसे कि धातुकला, काष्ठकला, पत्थर की कटाई, कढ़ाई, कला, और तंबू के निर्माण के लिए आवश्यक हर प्रकार की कारीगरी की कला।

इस प्रकार के दान की समानता उन विविध आत्मिक वरदानों में देखी जा सकती है जिन्हें पवित्र आत्मा ने नए नियम में कलीसिया को दिए, जैसे कि रोमियों 12, 1 कुरिन्थियों 12, और इफिसियों 4 में। और जैसे नए नियम में वरदान ईश्वरीय पवित्र आत्मा के द्वारा प्रदान किए जाते हैं, वैसे ही पुराने नियम में उन्हें परमेश्वर के ईश्वरीय आत्मा के द्वारा प्रदान किया जाता था।

पुराने नियम में परमेश्वर के आत्मा के ईश्वरत्व को देखने का चौथा तरीका परमेश्वर के वाचाई लोगों के बीच आत्मा के द्वारा राजाओं और अन्य अगुवों को अभिषेक और सामर्थ्य प्रदान करना है।

अभिषेक और सामर्थ्य

जब परमेश्वर के आत्मा ने राजाओं का अभिषेक किया तो उसने वासल या सेवक राजा को अधिकार प्रदान करने के लिए वाचा के सुजरेन या महान सम्राट के रूप में कार्य किया। वाचा की संरचना में स्वयं परमेश्वर ने सब बातों पर शासन किया। और उसने छोटे राजाओं को अपने स्थान पर अपने राज्य के भागों पर शासन करने के लिए ठहराया। उदाहरण के लिए, शाऊल और दाऊद परमेश्वर के सेवक राष्ट्र इस्राएल के राजा थे। उन्होंने परमेश्वर के स्थान पर राज्य किया और वे पूरी तरह से उसके अधिकार के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

अधीन थे। इसी कारण 1 इतिहास 29:23 में यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन का उल्लेख यहोवा के सिंहासन के रूप में किया गया है। अतः जब परमेश्वर के आत्मा ने राजाओं का अभिषेक किया तो वह उस अधिकार का प्रयोग कर रहा था जो स्वयं परमेश्वर का था। और यह दर्शाता है कि आत्मा स्वयं परमेश्वर था।

इस प्रकार के अभिषेक और वरदान के पुराने नियम के अधिकांश विवरण आत्मा का उल्लेख उसके वाचाई नाम यहोवा का प्रयोग करते हुए "यहोवा के आत्मा" के रूप में करते हैं। यह शायद इन कार्यभारों की वाचाई प्रकृति पर बल देने के लिए थी, जो अपने सुजरेन के रूप में सीधे परमेश्वर के प्रति उत्तरदाई थे। इसका एक उदाहरण इस्राएल के पहले राजा शाऊल से अभिषेक को लेकर उसके उत्तराधिकारी दाऊद को देने में पाया जाता है। जैसा कि हम 1 शमूएल 16:13-14 में पढ़ते हैं :

> तब शमूएल ने अपना तेल का सींग लेकर उसके भाइयों के मध्य में [दाऊद का] अभिषेक किया; और उस दिन से लेकर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा... यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया (1 शमूएल 16:13-14)।

दाऊद ने पवित्र आत्मा को तब प्राप्त किया जब उसका राजा के रूप में अभिषेक किया गया, यद्यपि वह अब तक इस्राएल के सिंहासन पर विराजमान नहीं हुआ था। इसी प्रकार, शाऊल ने पवित्र आत्मा की अलौकिक आशीष और उसके वरदान को खो दिया, यद्यपि वह अब तक राजा के रूप में राज्य कर रहा था। बाद में, जब दाऊद ने बतशेबा के साथ पाप किया तो दाऊद को डर था कि कहीं उसके साथ भी वैसा ही न हो जाए। इसलिए भजन 51:11 में उसने विनती की कि परमेश्वर का पवित्र आत्मा उससे ले न लिया जाए। वह सिंहासन के लिए विनती नहीं कर रहा था — उसकी अपेक्षा थी कि सिंहासन तो उसके पास रहेगा, जैसे शाऊल के पास पाप करने के बाद भी सिंहासन रहा था। इसकी अपेक्षा, दाऊद ने परमेश्वर की सामर्थी उपस्थिति को रखने की विनती की जिसने उसे परमेश्वर की राजकीय इच्छा को पूरा करने में समर्थ बनाया।

नया नियम यीशु के बपतिस्मा और मसीहा या ख्रिस्त के अपने कार्यभार के अभिषेक के विवरण में आत्मा की इस गतिविधि पर कुछ प्रकाश डालता है। यह विवरण मत्ती 3:14-17, मरकुस 1:9-11, और लूका 3:21, 22 में पाया जाता है। इन सारे विवरणों में, यीशु के बपतिस्मा ने उसे सेवकाई के लिए तैयार किया, पवित्र आत्मा एक कबूतर के समान भौतिक रूप से उसके ऊपर उतरा, और पिता ने स्वर्ग इस बात की पुष्टि करते हुए कहा वह यीशु से प्रसन्न है। निस्संदेह, यीशु के बपतिस्मा के समय परमेश्वर का आत्मा त्रिएकता का तीसरा व्यक्तित्व है। और यह हमें इस बात को देखने में सहायता करता है कि उसी पवित्र आत्मा ने पुराने नियम में वही कार्य किया।

निस्संदेह, पुराने नियम के मूल पाठकों ने उसकी व्याख्या इस अर्थ में नहीं की होगी कि यहोवा का आत्मा परमेश्वरत्व में एक अलग व्यक्तित्व था। फिर भी, वे यह देखने में समर्थ रहे होंगे कि जब आत्मा ने लोगों का अभिषेक किया और उन्हें वरदान दिया, तो इसका अर्थ था कि परमेश्वर स्वयं जगत के साथ परस्पर कार्य कर रहा था। हम इसे 1 शमूएल 10:6 में शाऊल के अभिषेक में, और यशायाह 11:2 में राजा के रूप में दाऊद के शासन के लिए वरदान प्रदान करने में देखते हैं। यह मीका 3:8 में भविष्यवक्ता के रूप में मीका के वरदान में भी स्पष्ट है। और न्यायियों की पुस्तक में यहोवा के आत्मा ने न्यायियों को नियुक्त किया और उन्हें बल दिया : 3:10 में वह ओत्नीएल में; 6:34 में गिदोन में; 11:29 में यिप्तह में; और 13:25, 14:6, 19, तथा 15:14 में शिमशोन में समाया।

> पुराना नियम सुझाव देता है कि बिना स्पष्ट और पूरा नाम लिए आत्मा परमेश्वर ही है। अतः जब हम बाइबल के आरंभ में उत्पत्ति 1:2 को पढ़ते हैं तो हम एलोहीम के आत्मा को जल के ऊपर या सृष्टि के ऊपर मंडराता हुआ देखते हैं। यह अस्पष्ट

> प्रतीत होता है, परंतु जब आप भजन 104 की ओर मुड़ते हैं तो भजनकार कहता है कि आत्मा ही है जो सृष्टि को जीवन प्रदान करता है। और फिर हम यहेजकेल 36 जैसे अनुच्छेद की ओर मुड़ते हैं। और यह नई वाचा की परमेश्वर की प्रतिज्ञा के संदर्भ में एक विचित्र अनुच्छेद है। परमेश्वर अपने लोगों से कहता है, "मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे।" यह कहता है कि उनमें वास करनेवाला आत्मा एक नए प्रकार के व्यक्ति की रचना करेगा, ऐसा जो अनाज्ञाकारिता की ओर नहीं बल्कि आज्ञाकारिता की ओर झुका रहेगा। और इसलिए जब हम सोचते हैं कि आत्मा पुराने नियम में क्या करता है, तो आत्मा तो एक है... और उसका एक आधारभूत कार्य जीवन प्रदान करना है। वह जीवनदायक सिद्धांत है। वही है जो सृष्टि को जीवन देता है, अर्थात् नई सृष्टि का जीवन देता है, पुराने नियम में भी हम यही देखते हैं। और इसलिए जब हम पूछते हैं, "जीवन कौन देता है?" तो हम जानते हैं कि जीवन देनेवाला स्वयं परमेश्वर ही है। और इसलिए पुराना नियम यह सुझाव भी देता है कि आत्मा सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही है।
>
> — डॉ. उखे एनिजर

यहाँ तक हमने परमेश्वर के आत्मा, और आत्मा के ईश्वरत्व के उल्लेखों पर ध्यान देने के द्वारा देखा है कि कैसे न्यूमैटोलोजी की धर्मशिक्षा पुराने नियम में विकसित हुई। आइए अब संक्षिप्त रूप में देखें कि कैसे ये उल्लेख आत्मा के व्यक्तित्व की ओर भी संकेत करते हैं।

व्यक्तित्व

पुराना नियम स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि परमेश्वर व्यक्तिगत है। परंतु यह इस बात को नहीं दर्शाता कि उसमें कितने व्यक्तित्व हैं, या क्या उसके व्यक्तित्व एक दूसरे से अलग हैं या नहीं। इसलिए जब हम कहते हैं कि पुराना नियम आत्मा के व्यक्तित्व को दर्शाता है, तो हमारा अर्थ यह नहीं है कि वह उसे पिता और पुत्र से एक अलग व्यक्तित्व के रूप में दर्शाता है। हमारे कहने का अर्थ यह है कि वह उसे पूर्ण रूप से ईश्वरीय, असृजित व्यक्तित्व के रूप में प्रमाणित करता है।

इसके विपरीत, कई बार यह तर्क दिया जाता है कि पुराने नियम में परमेश्वर का आत्मा एक अवैयक्तिक बल या शक्ति के रूप में उपस्थित था। परंतु जैसे कि हम पहले ही देख चुके हैं, आत्मा के कई उल्लेख स्वयं परमेश्वर के प्रत्यक्ष उल्लेख हैं। और परमेश्वर निश्चित रूप से अवैयक्तिक शक्ति नहीं है। अतः वह प्रत्येक अनुच्छेद जो परमेश्वर के आत्मा को स्वयं परमेश्वर की समानता में रखता है, वह दर्शाता है कि आत्मा व्यक्तिगत है। इसके अतिरिक्त, ऐसे अनुच्छेद भी हैं जो आत्मा के साथ विशेष रूप से व्यक्तिगत विशेषताओं को जोड़ते हैं, ऐसी विशेषताओं को जिनका प्रयोग एक अवैयक्तिक शक्ति का वर्णन करने के लिए नहीं किया जा सकता।

> जब पुराना नियम आत्मा की भाषा-शैली का प्रयोग करता है तो यह आम तौर पर परमेश्वर की उपस्थिति और परमेश्वर की सामर्थ्य के संदर्भ में होता है। क्योंकि उल्लेख ऐसे परमेश्वर के साथ संबंध रखने के विषय में हैं जो व्यक्तिगत है, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि हमें उन उल्लेखों को ऐसे समझना चाहिए जैसे वे उस परमेश्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति का उल्लेख कर रहे हों जो विद्यमान है, यद्यपि पवित्रशास्त्र की सामूहिक गवाही से अलग होकर असंगत लेखों को पढ़ना और

> उन लेखों को अलग-अलग करके तथा विच्छेदित रूप में पढ़ना संभव है, फिर भी मेरे विचार में यदि हम पुराने नियम के कैनन को एक समूह के रूप में देखें, और आत्मा के कार्य को स्वयं परमेश्वर द्वारा सामर्थ्य देने से जोड़कर देखें, तो यह इस अर्थ की ओर अग्रसर करता है कि यह परमेश्वर का आत्मा है, और कि यह एक व्यक्तित्व है। फिर जब हम नए नियम की ओर बढ़ते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वरत्व का तीसरा व्यक्तित्व पिता और पुत्र के समान ही एक व्यक्तित्व है।
>
> — डॉ. ग्लेन आर. क्रीडर

पुराना नियम कई रूपों में परमेश्वर के आत्मा के व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है। परंतु समय की कमी के कारण हम केवल चार तरीकों पर ध्यान देंगे, हम इससे आरंभ करेंगे कि कैसे पुराना नियम आत्मा के मनोभावों पर ध्यान आकर्षित करता है।

मनोभाव

जैसा कि हम जानते हैं, अवैयक्तिक शक्तियों में मनोभाव नहीं होते। केवल व्यक्तियों में होते हैं। हमारे जीवनों में हम दुःख, क्रोध, आनंद, और अन्य कई तरह के मनोभावों का अनुभव करते हैं। और पवित्रशास्त्र पवित्र आत्मा का वर्णन भी ऐसे ही रूपों में करता है। उदाहरण के लिए, यशायाह ने लिखा कि परमेश्वर के विरुद्ध इस्राएल के विरोध ने पवित्र आत्मा को "खेदित किया।" एक बार फिर से सुनिए कि यशायाह ने यशायाह 63:10 में क्या लिखा :

> उन्होंने बलवा किया और उसके पवित्र आत्मा को खेदित किया; इस कारण वह पलटकर उनका शत्रु हो गया, और स्वयं उन से लड़ने लगा (यशायाह 63:10)।

इसी प्रकार, मीका 2:7 जैसे पद इस संभावना को व्यक्त करते हैं कि यहोवा का आत्मा क्रोधित भी हो सकता है।

संबंध

दूसरा, हम उन अनुच्छेदों में आत्मा के व्यक्तित्व को देखते हैं जो मनुष्यजाति के साथ उसके संबंधों में उसकी सक्रिय सहभागिता के बारे में बात करते हैं। उदाहरण के लिए, नूह के दिनों में जलप्रलय की कहानी में उत्पत्ति 6:3 परमेश्वर के आत्मा के मनुष्यजाति के साथ विवाद करने के बारे में बात करता है। यह विवाद व्यक्तिगत था क्योंकि इसमें मनुष्यजाति के पाप की जाँच और बुद्धिमानी के साथ उसका प्रत्युत्तर शामिल था। यहाँ एक यह सुझाव भी हो सकता है कि परमेश्वर के आत्मा ने इस जगत में जलप्रलय तब भेजा जब उसका धैर्य समाप्त हो गया। अवैयक्तिक शक्तियाँ हमसे विवाद नहीं करतीं, बुद्धिमानी से प्रत्युत्तर नहीं देतीं, और न ही धैर्य को दर्शाती हैं। यदि आत्मा ने ये सब कार्य किए, तो इसका अर्थ है कि वह एक व्यक्तित्व है।

अधिकार

तीसरा, आत्मा के व्यक्तित्व को उसके अधिकार के प्रति लोगों के प्रत्युत्तर के द्वारा दर्शाया जाता है। एक उदाहरण के तौर पर, निर्गमन 17:1-7 मरीबा के सोते पर लोगों के विद्रोह का वर्णन करता है। इस विवरण में लोगों ने मूसा से शिकायत की कि वहाँ उनके पास पीने के लिए पानी नहीं था, और उन्होंने "यहोवा की परीक्षा" की। भजन 106:33 यह कहते हुए इस घटना को याद करता है कि लोगों ने "उसकी आत्मा से बलवा किया।" अब निस्संदेह, लोग अवैयक्तिक नियमों और संस्थाओं के विरुद्ध विद्रोह कर सकते हैं। परंतु जब भजन 106 कहता है कि लोगों ने परमेश्वर के आत्मा के विरुद्ध विद्रोह किया, इसका

अर्थ है कि उन्होंने न केवल उसके नियमों के विरुद्ध विद्रोह किया बल्कि उस यहोवा के विरुद्ध जिसके पास उनके ऊपर अधिकार था।

इच्छाशक्ति

और चौथा, आत्मा के व्यक्तित्व को उन स्थानों पर भी दिखाया गया है जहाँ उसे अपनी इच्छाशक्ति के बारे में बात करते और उन निर्णयों को करते हुए पाया जाता है कि भविष्यवक्ताओं को उसकी ओर से क्या कहना चाहिए। उदाहरण के लिए, 2 शमूएल 23:2 में दाऊद ने दावा किया कि यहोवा के आत्मा ने उसके द्वारा बात की। अर्थात् दाऊद वह बोल रहा था जो *आत्मा* चाह रहा था कि वह बोले। इसी प्रकार, यहेजकेल 11:5 में यहोवा के आत्मा ने यहेजकेल भविष्यवक्ता से बात की और उसे बताया कि उसे अपने लोगों से क्या कहना है। फिर से, अवैयक्तिक शक्तियाँ बातचीत नहीं करतीं, विचारों को अभिव्यक्त करने का तो कोई सवाल ही नहीं है। केवल व्यक्ति ऐसा करते हैं।

जैसा कि हमने पहले कहा था, इस तरह के अनुच्छेद पवित्र आत्मा को परमेश्वरत्व में एक अलग व्यक्तित्व के रूप में नहीं दर्शाते। परंतु वे यह अवश्य दर्शाते हैं कि परमेश्वर का आत्मा एक ईश्वरीय व्यक्तित्व है, न केवल एक शक्ति।

पुराने नियम में कई स्थानों पर परमेश्वर का आत्मा पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण व्यक्तिगत है। परंतु ये अनुच्छेद *विशेष रूप से* परमेश्वर के किसी व्यक्तित्व का उल्लेख नहीं करते हैं। आखिरकार, तीन व्यक्तित्वों में परमेश्वर का अस्तित्व नए नियम के आने तक प्रकट नहीं हुआ था। परंतु जैसा कि हम देखेंगे, नया नियम अक्सर त्रिएकता के तीसरे व्यक्तित्व को पुराने नियम में परमेश्वर के आत्मा की समानता में देखता है। अतः मसीहियों के रूप में हमारे लिए यह निष्कर्ष निकालना सही है कि पुराने नियम के ये उल्लेख त्रिएकता के एक पूर्ण सदस्य के रूप में पवित्र आत्मा के प्रकाशन का पूर्वाभास प्रदान करते हैं।

अब जब हमने पुराने नियम के दृष्टिकोण से त्रिएकता में पवित्र आत्मा पर विचार-विमर्श कर लिया है, इसलिए आइए हम नए नियम में परमेश्वर के आगे के प्रकाशन की ओर मुड़ें।

नया नियम

नया नियम आम तौर पर पवित्र आत्मा का उल्लेख ऐसे रूपों में करता है जो पुराने नियम की ध्वनि प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, यह यूनानी शब्द *न्यूमा* शब्द, अर्थात् "आत्मा" का प्रयोग वैसे ही करता है जैसे पुराना नियम *रूआख* का करता है। दोनों शब्दों के अर्थ का दायरा समान है, जो हवा, श्वास, जानवरों की जीवन-शक्ति, मानवीय आत्माओं, और देह-रहित आत्माओं का उल्लेख करते हैं। वास्तव में, सेप्तुआजिंत अर्थात् पुराने नियम का यूनानी अनुवाद सामान्यतः *रूआख* का अनुवाद *न्यूमा* के रूप में करता है।

पुराने नियम के समान ही नए नियम में भी परमेश्वर के आत्मा को विविध नामों से जाना जाता है। इनमें से अधिकांश शब्द *न्यूमा* का प्रयोग करते हैं। उसे अक्सर "पवित्र आत्मा" कहा जाता है। परंतु उसे "परमेश्वर का आत्मा," "पिता का आत्मा," "प्रभु का आत्मा," "यीशु का आत्मा," "मसीह का आत्मा," "सत्य का आत्मा," "पवित्रता का आत्मा," "जीवन का आत्मा," "अनुग्रह का आत्मा," और अन्य समान नामों से जाना जाता है। ये नाम पुराने नियम में पवित्र आत्मा को परमेश्वर के आत्मा के साथ पहचानते हैं, और उसके चरित्र और कार्य का वर्णन भी करते हैं। वे उसे पिता और पुत्र के साथ एकता में दर्शाते हैं, और उसमें सत्य, पवित्रता, जीवन और अनुग्रह के गुणों को प्रकट करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

आत्मा के व्यक्तित्व के विषय में नया नियम और अधिक स्पष्टता और प्रत्यक्ष रूप से सिखाता है कि पवित्र आत्मा त्रिएकता के भीतर ही एक भिन्न व्यक्तित्व है। परंतु नए नियम में भी परमेश्वर के लोगों को उसके व्यक्तित्व और कार्य की अपनी समझ में बढ़ना जरूरी था। सुसमाचारों में यीशु की शिक्षाएँ हमें दर्शाती हैं कि उसकी पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान यहूदी और मसीही क्या समझते थे। और शेष नया नियम हमें सिखाता है कि अंततः प्रेरितों ने क्या समझा और क्या सिखाया।

इसी इतिहास की अनुरूपता में नए नियम का हमारा विचार-विमर्श दो भागों में विभाजित होगा। पहला, हम देखेंगे कि यीशु ने पवित्र आत्मा के बारे में प्रत्यक्ष रूप से क्या सिखाया। और दूसरा, हम देखेंगे कि बाद में प्रेरितों ने अपनी सेवाकाइयों के दौरान क्या सिखाया। आइए हम यीशु के साथ शुरू करें।

यीशु

अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान यीशु ने पुराने नियम की शिक्षाओं को अभिपुष्ट किया कि पवित्र आत्मा स्वयं परमेश्वर है, और कि पवित्र आत्मा एक व्यक्तित्व है। परंतु उसने कुछ नया भी प्रकट किया — वह यह कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व में अलग-अलग व्यक्तित्व हैं। यह एक कारण था कि यहूदी यीशु से बहुत नाराज हो गए थे। वे परमेश्वर होने के उसके दावे के कारण बहुत ही क्रोधित थे। जैसे कि यूहन्ना ने यूहन्ना 5:18 में टिप्पणी की :

> इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, क्योंकि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कह कर अपने आप को परमेश्वर के तुल्य भी ठहराता था (यूहन्ना 5:18)।

यहूदियों ने गलत रीति से समझा था कि यीशु परमेश्वर नहीं हो सकता क्योंकि स्वर्गीय पिता पहले से परमेश्वर था। उन्होंने सही रीति से समझा कि केवल एक सच्चा परमेश्वर है। परंतु उन्होंने इसका गलत अर्थ निकाला कि परमेश्वर का अस्तित्व केवल एक व्यक्तित्व में था। शायद इसी कारण यहूदी क्रोधित नहीं हुए जब यीशु ने पवित्र आत्मा को व्यक्तित्व के रूप में पहचाना। गलत रीति से ही सही, पर उन्होंने समझा होगा कि यीशु परमेश्वर का उल्लेख ही पवित्र आत्मा के रूप में कर रहा होगा। हम इसे मत्ती 12 और मरकुस 3 में देखते हैं जहाँ यीशु ने दुष्टात्माओं को निकालने के अपने अधिकार को समझाया। मत्ती 12:24 में फरीसियों ने उस पर “दुष्टात्माओं के सरदार बालज़बूल” की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालने का आरोप लगाया। और यीशु ने पद 28 में उत्तर दिया कि वह “परमेश्वर के आत्मा” की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है। यीशु की वृहद् शिक्षाओं के संदर्भ में यह स्पष्ट है कि वह आत्मा का उल्लेख पिता से अलग एक व्यक्तित्व के रूप में कर रहा था। परंतु ऐसा कोई सुझाव नहीं है कि फरीसियों ने उसके शब्दों के महत्व को समझ लिया हो।

अपने अनुयायियों के साथ एकांत में अपनी चर्चा के दौरान यीशु ने और अधिक सीधे तौर पर बात की। पवित्र आत्मा के भिन्न व्यक्तित्व पर आधारित उसकी पूर्ण शिक्षाओं को यूहन्ना 14–16 में देखा जा सकता है। ये अध्याय यीशु के “अंतिम वार्तालाप” — अर्थात् ग्यारह विश्वासयोग्य प्रेरितों से कहे वे अंतिम वचन हैं जिनका उद्देश्य उन्हें उसकी मृत्यु के लिए तैयार करना था। यूहन्ना 14:16-17 में यीशु ने कहा :

> मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा (यूहन्ना 14:16-17)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

शेष संसार के साथ-साथ अविश्वासी यहूदी इस बात से अपरिचित थे कि पवित्र आत्मा पिता से एक अलग व्यक्तित्व था। परंतु चेले पहले से ही पवित्र आत्मा के अलग व्यक्तित्व के बारे में यीशु से सीख चुके थे। और यीशु ने अपने पूरे अंतिम वार्तालाप में आत्मा के भिन्न व्यक्तित्व की ओर ध्यान आकर्षित करना जारी रखा। यूहन्ना 14:26 में उसने उल्लेख किया :

> सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा (यूहन्ना 14:26)।

यूहन्ना 15:26 में उसने कहा :

> वह सहायक... जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा... जो पिता की ओर से निकलता है (यूहन्ना 15:26)।

यूहन्ना 16:7 में उसने कहा :

> यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूँगा (यूहन्ना 16:7)।

और यूहन्ना 16:13 में यीशु ने कहा :

> आत्मा... अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा (यूहन्ना 16:13)।

अपनी संपूर्ण अंतिम वार्तालाप में यीशु ने बार-बार यह सिखाया कि पवित्र आत्मा पिता से और उससे एक अलग व्यक्तित्व है। पवित्र आत्मा पिता के द्वारा और उसके पुत्र यीशु के द्वारा भेजा जाएगा। आत्मा वह कहेगा जो पिता ने उससे कहने को कहा है, और वह उसके लोगों के बीच परमेश्वर की सक्रिय उपस्थिति के रूप में पुत्र का स्थान ले लेगा। अतः आत्मा न तो पिता है और न ही पुत्र। वह अपने आप में एक अलग व्यक्तित्व है।

> अब, हममें से बहुत से लोग जब "पवित्र आत्मा" शब्द को सुनते हैं तो वे उसे हवा के रूप में सोचते हैं, और कभी-कभी हम उसे एक "निर्जीव वस्तु" के रूप में सोचने की परीक्षा में भी पड़ जाते हैं, परंतु जब आप यूहन्ना 14-16 को देखते हैं तो आप पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के विषय में कुछ अद्वितीय बातों को देखते हैं। प्रभु यीशु मसीह ने उसका उल्लेख "वह" के रूप में किया, अर्थात् वह कोई "निर्जीव वस्तु" नहीं बल्कि व्यक्तिगत है.. परंतु वह एक व्यक्तित्व ही नहीं है, उसका उद्गम — कि वह स्वर्ग से आया है — स्पष्ट रूप से एक चिह्न है कि वह अपनी प्रकृति में ईश्वरीय भी है। और एक और शब्द भी है जिसका प्रयोग यीशु करता है, जो "एक और" सहायक है, वह जो उससे अलग है परंतु फिर भी वह उसे जारी रखेगा जो उसने किया है। और उसे सत्य का आत्मा भी कहा गया है — ऐसी विशेषता जो केवल यीशु के पास है। उसने हमें बताया कि वह मार्ग, सत्य और जीवन है... अतः पवित्र आत्मा एक अलग व्यक्तित्व है, परंतु उसमें इस रूप में प्रभु यीशु मसीह का ही तत्व है कि वह सत्य का आत्मा भी है, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु यीशु मसीह सत्य है।
>
> — रेव्ह. वुयानी सिंदो

मत्ती 28:19 में, अर्थात् महान आदेश में भी यीशु ने जब यह कहा तो उसने आत्मा के अलग व्यक्तित्व की ओर ध्यान आकर्षित किया :

> इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो (मत्ती 28:19)।

अंग्रेजी और यूनानी दोनों में "नाम" के रूप में अनूदित शब्द यहाँ एकवचन है, और पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा सबको एकसमान रूप में दर्शाया गया है।

महान आदेश के इस भाग को आम तौर पर "त्रिएक्य पद्धति" कहा जाता है क्योंकि यह त्रिएकता के तीनों व्यक्तित्वों के नाम ऐसे दर्शाता है जो परमेश्वरत्व में उनकी सहभागी सदस्यता की ओर संकेत करता है। जब यीशु ने कहा कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सब एक ही नाम को रखते हैं, तो उसने संकेत किया कि उनमें परमेश्वर का समान अधिकार है — अर्थात् वे सब निश्चित रूप से परमेश्वर हैं। उसने यह भी दर्शाया कि परमेश्वर के तीनों व्यक्तित्व उन राष्ट्रों पर राज्य करेंगे जहाँ चेले बनाए गए हैं।

नए नियम में यीशु की शिक्षाओं पर ध्यान देने के बाद आइए अब देखें कि प्रेरितों ने पवित्र आत्मा के बारे में क्या कहा।

प्रेरित

पहला, हमें इस बात पर बल देना चाहिए कि प्रेरितों ने पवित्र आत्मा के विषय में पुराने नियम की और यीशु द्वारा सिखाई सब बातों पर विश्वास किया। उन्होंने उसे पूर्ण ईश्वरीय, तथा पिता और पुत्र की ओर से आए एक अलग व्यक्तित्व के रूप में समझा। केवल एक उदाहरण के रूप में प्रेरितों के काम 5:3-4 में पतरस के शब्दों को सुनें। जब हनन्याह और सफीरा ने आरंभिक कलीसिया को दिए गए आर्थिक दान के विषय में झूठ बोला, तो पतरस ने उनसे कहा :

> "हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले...? तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है" (प्रेरितों के काम 5:3-4)।

पतरस ने कहा कि पवित्र आत्मा से झूठ बोलना परमेश्वर से झूठ बोलना था, और इस प्रकार प्रमाणित किया कि पवित्र आत्मा स्वयं परमेश्वर है। यही नहीं, यह बात कि हनन्याह पवित्र आत्मा से झूठ बोल पाया, इस बात को प्रमाणित करता है कि पवित्र आत्मा व्यक्तित्व है। और 2 कुरिन्थियों 13:14 में पौलुस ने पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व और अलग व्यक्तित्व की पुष्टि की जब उसने अपनी पत्री को इस प्रकार समाप्त किया :

> प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे (2 कुरिन्थियों 13:14)।

पौलुस ने तीनों व्यक्तित्वों का सम्मान और उनसे संबंधित गुणों के आधार पर एकसमान स्तर पर उल्लेख करने के द्वारा परमेश्वर की त्रिएक्य समझ को अभिव्यक्त किया। इसी प्रकार 1 पतरस 1:1-2 में पतरस ने विश्वासियों का वर्णन इस रीति से किया :

> [वे जो] परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने और यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिये चुने गए हैं (1 पतरस 1:1-2)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

इन त्रिएक्य पद्धतियों ने उसे दर्शाया जिसका प्रयोग यीशु ने महान आदेश में किया था। वे इस बात की गवाही देते हैं कि पिता, आत्मा और पुत्र यीशु मसीह एकसमान रूप में परमेश्वर हैं, उनमें समान सामर्थ्य और महिमा है, और वे सब अलग-अलग व्यक्तित्व हैं।

और प्रेरितों ने आत्मा के पूर्ण ईश्वरत्व और व्यक्तित्व की पुष्टि कई अन्य रूपों में भी की है। उन्होंने उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं का वर्णन किया, जैसे विचार और मनोभाव। उदाहरण के लिए प्रेरितों के काम 15:28 में पवित्र आत्मा ने निर्धारित किया कि पुराने नियम की व्यवस्था अन्यजातियों पर कैसे लागू हुई। रोमियों 5:5 उसके प्रेम के बारे में बात करता है। और इफिसियों 4:30 उसके शोकित होने का उल्लेख करता है। प्रेरितों ने इच्छापूर्ण कार्यों के आधार पर भी उसका वर्णन किया जैसे रोमियों 8:26, 27 में कलीसिया के लिए मध्यस्थता करना, और 1 कुरिन्थियों 12:11 में अपनी इच्छा के अनुसार वरदान देना। और उसने अकथनीय ईश्वरीय गुणों को उसके साथ जोड़ा — ऐसे गुण जो केवल परमेश्वर में हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, पौलुस ने उसके सर्वज्ञान का वर्णन इफिसियों 1:17, और 1 कुरिन्थियों 2:10, 11 में किया, जहाँ उसने कहा कि आत्मा वह सब जानता है जो परमेश्वर जानता है। और इब्रानियों 9:14 पवित्र आत्मा को "सनातन आत्मा" कहता है, जिसके द्वारा वह दर्शाता हैं कि वह सृष्टि से पहले विद्यमान था और कि उसका निरंतर अस्तित्व अनंत और अटूट है।

परंतु प्रेरितों द्वारा त्रिएकता के सदस्य के रूप में पवित्र आत्मा को प्रमाणित करने का एक सबसे महत्वपूर्ण तरीका पुराने नियम के पवित्रशास्त्र की प्रेरणा और लेखक को उसके साथ जोड़ने का है। प्रेरितों के काम 1:16 में पतरस ने यह कहा :

> पवित्रशास्त्र का वह लेख... जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से... पहले से कहा था (प्रेरितों के काम 1:16)।

प्रेरितों के काम 28:25 में पौलुस ने कहा :

> पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे बापदादों से ठीक ही कहा (प्रेरितों के काम 28:25)।

और 2 पतरस 1:20-21 में पतरस ने यह कहते हुए पवित्रशास्त्र को लिखने में आत्मा के कार्य का पूर्ण सारांश प्रदान किया :

> पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे (2 पतरस 1:20-21)।

> मेरे विचार में पवित्रशास्त्र की प्रेरणा के द्वारा पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व और ईश्वरत्व दिलचस्प है। यहाँ हम परमेश्वर के वचन के बारे में बात कर रहे हैं, और परमेश्वर का वचन हमें अक्सर आत्मा के द्वारा ही प्रदान किया जाता है; हम बार-बार यह सुनते हैं, "यहोवा का वचन" या "आत्मा ने कहा" या "मूसा ने कहा," और ये सब एकसमान रूप में पाए जाते हैं... यह आत्मा का एक प्रमुख कार्य है। परमेश्वर का वचन आत्मा का वचन है, और आत्मा का वचन परमेश्वर का वचन है।

— डॉ. जे. स्कॉट होरेल

इससे बढ़कर पवित्र आत्मा के पूर्ण ईश्वरत्व और व्यक्तित्व की समझ की पुष्टि तब की गई जब यीशु की प्रतिज्ञा के अनुसार आत्मा को अंततः कलीसिया पर उंडेला गया। प्रेरितों के काम 2 दर्शाता है कि यीशु के स्वर्ग में चढ़ने के बाद आए पहले पिंतेकुस्त के दिन पूरी कलीसिया ने एक बड़े भव्य रूप में पवित्र आत्मा के वरदान को प्राप्त किया। आग की जीभें उनके ऊपर उतरीं और उन्होंने हर भाषा में सुसमाचार का वर्णन किया। और यहाँ से प्रेरितों को ऐसे वरदान दिए गए जिन्होंने पूरी सृष्टि पर परमेश्वर के अधिकार को प्रकट किया। उन्हें बीमारों को चंगा करने, मृतकों को जीवित करने, और अन्य कई आश्चर्यकर्मों को करने के योग्य बनाया गया जिन्होंने पवित्र आत्मा के ईश्वरीय अधिकार और कृपा के सत्य की गवाही दी।

यह स्पष्ट है कि प्रेरितों ने पवित्र आत्मा को त्रिएकता में ही एक अलग व्यक्तित्व के रूप में देखा। उन्होंने पहचाना कि इस सत्य का उल्लेख पुराने नियम में किया गया था। और वे समझ गए थे कि यीशु ने भी उसे प्रकट किया था। परंतु उन्होंने आत्मा की सामर्थी उपस्थिति की वास्तविकता का अनुभव भी किया था, जब उसने इतिहास को परमेश्वर के उद्धार के कार्य के नए चरण की ओर आगे बढ़ाया। उन पर बड़ी सामर्थ्य के साथ पवित्र आत्मा को उंडेला गया, जिससे उन्होंने आश्चर्यकर्म किए, परमेश्वर से प्रकाशनों को प्राप्त किया, और उन्होंने नए नियम के पवित्रशास्त्र को लिखने की प्रेरणा भी प्राप्त की।

त्रिएकता में पवित्र आत्मा पर आधारित हमारे अध्याय में अब तक हमने पुराने नियम और नए नियम पर ध्यान देने के द्वारा न्यूमैटोलोजी के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन किया है। अब हम अपने अंतिम मुख्य विषय को संबोधित करने के लिए तैयार हैं : कलीसियाई इतिहास में औपचारिक न्यूमैटोलोजी का विकास।

कलीसियाई इतिहास

पहली कुछ सदियों में आरंभिक कलीसिया ने पवित्र आत्मा पर आधारित पवित्रशास्त्र की शिक्षा को स्पष्ट और सारगर्भित करने के लिए कार्य किया। पवित्रशास्त्र ने हमेशा यह सिखाया है कि केवल एक परमेश्वर है, और पिता, पुत्र और आत्मा मिलकर ही वह एक परमेश्वर है। परंतु यह सचमुच एक जटिल और रहस्यात्मक विचार है। इसलिए मसीही अक्सर इस बात पर असहमत रहे हैं कि कैसे उसे स्पष्ट और परिभाषित किया जाए।

हम आरंभिक कलीसियाई इतिहास में न्यूमैटोलोजी के विकास में चार चरणों पर ध्यान देंगे। पहला, हम प्रेरितों के विश्वास-कथन में पवित्र आत्मा की अभिपुष्टि पर विचार करेंगे। दूसरा, हम औपचारिक त्रिएकता-संबंधी धर्मशिक्षा की खोज करेंगे। तीसरा, हम देखेंगे कि कैसे इस धर्मशिक्षा को नाईसीन विश्वास-कथन में दर्शाया गया है। और चौथा, हम त्रिएकता की सत्ता मीमांसा और उसके विधान के बीच अंतर का उल्लेख करेंगे। आइए हम प्रेरितों के विश्वास-कथन के साथ आरंभ करें।

प्रेरितों का विश्वास-कथन

प्रेरितों का विश्वास-कथन उन स्थानीय बपतिस्मा-संबंधी कथनों से विकसित हुआ जो 200 ईस्वी के लगभग पाए जाते थे। वे ऐसे कथन थे जिनकी पुष्टि बपतिस्मा के समय नए विश्वासियों को करनी होती थी। कुछ प्राचीन विवरण दर्शाते हैं कि जब एक व्यक्ति को बपतिस्मा दिया जाता था तो उसे तीन बातों की पुष्टि करनी होती थी : एक पिता से, एक पुत्र से और एक पवित्र आत्मा से संबंधित। और प्रेरितों के विश्वास-कथन की रचना इन अभिपुष्टियों के इर्द-गिर्द ही हुई है। इस प्रकार, यह विधिवत रूप से पवित्र आत्मा को पिता और पुत्र के स्तर पर ही रखता है। और यह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि यह आरंभिक

कलीसिया की धारणा को प्रकट करता है कि पवित्र आत्मा असृजित परमेश्वरत्व में तीसरा अलग व्यक्तित्व है, और पिता तथा पुत्र के स्तर के अनुरूप है।

यही नहीं, प्रेरितों के विश्वास-कथन की संरचना में ही त्रिएकता के अलग-अलग व्यक्तित्वों के भिन्न-भिन्न कार्य इसी नाम के नीचे दिए गए हैं। अतः पिता को आकाश और पृथ्वी के कर्ता के रूप में दर्शाया गया है। पुत्र के विषय में विश्वास-कथन उसके गर्भधारण, जन्म, मृत्यु, गाड़े जाने, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, और भावी पुनरागमन को दर्शाता है। और पवित्र आत्मा का उल्लेख कलीसिया के सँभालनेवाले और विश्वासियों पर उद्धार को लागू करनेवाले के रूप में किया गया है।

> प्रेरितों का विश्वास-कथन पवित्र आत्मा को त्रिएकता के पूर्ण सदस्य के रूप में दर्शाता है। प्रेरितों के विश्वास-कथन का प्रारूप निश्चित रूप से त्रिएक्य है : "[हम] पिता परमेश्वर पर विश्वास करते हैं... जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है। [हम] उसके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु, यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, जो पवित्र आत्मा के द्वारा उत्पन्न हुआ... [और हम] पवित्र आत्मा पर, पवित्र सार्वभौमिक कलीसिया पर, पवित्र संतों की संगति... पर विश्वास [करते हैं।]" और इस प्रकार त्रिएक्य प्रारूप बहुत ही स्पष्ट है, और वह थोड़ा बहुत उस प्राथमिक भूमिका के बारे में भी बात करता है जो तीनों में से प्रत्येक व्यक्तित्व निभाता है, अतः पिता आकाश और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता है; पुत्र जो कुँवारी मरियम से उत्पन्न हुआ और बढ़ा, तथा पाप के बलिदान के रूप में क्रूस पर मारा गया; और पवित्र आत्मा जिसकी भूमिका वास्तव में अब प्रमुख रूप से कलीसिया में, संतों की संगति में, पापों की क्षमा में और मसीह की देह के कार्य में प्रकट होती है।
>
> — डॉ. साइमन विबर्ट

इस तथ्य के बावजूद भी कि प्रेरितों के विश्वास-कथन ने आत्मा के पूर्ण ईश्वरत्व, और उसके पूर्ण व्यक्तित्व की ओर संकेत किया, फिर भी इसने त्रिएकता की एक स्पष्ट परिभाषा प्रदान नहीं की। इसमें सारे सही तत्व तो पाए जाते हैं। परंतु इसने ऐसी कोई शब्दावली नहीं बनाई जिसे कलीसिया ने अंततः स्वीकार किया हो। परिणामस्वरूप, लोग कह सके कि उन्होंने विश्वास-कथन की भाषा-शैली की पुष्टि की, फिर चाहे वे इस बात पर सहमत नहीं हुए कि आत्मा पिता और पुत्र के साथ समान स्तर को रखनेवाला तीसरा अलग व्यक्तित्व था।

यह उल्लेख कर लेने के बाद कि कैसे प्रेरितों के विश्वास-कथन ने कलीसियाई इतिहास में न्यूमैटोलोजी के विकास को प्रकट किया, इसलिए आइए त्रिएकता की औपचारिक धर्मशिक्षा के आरंभिक चरणों पर चर्चा करें।

त्रिएकता की धर्मशिक्षा

त्रिएकता के रूप में परमेश्वर का अस्तित्व बहुत ही रहस्यमय है। यह हमारे अनुभव से बहुत परे है इसलिए हमें इसके बारे में सोचने में कठिनाई होती है, इसके बारे में बात करना तो और भी अधिक कठिन है। इसलिए आरंभिक कलीसिया के लिए परमेश्वर के विषय में अपनी मान्यताओं पर चर्चा करने हेतु यह उपयोगी था कि वे उसके बारे में बात करने के लिए सुसंगत तरीकों को खोजें। और इस क्षेत्र में आरंभिक कलीसिया के अधिकांश लेखन ने आरंभिक धर्मविज्ञानी टरटूलियन के लेखनों से लाभ प्राप्त किया।

टरटूलियन 155–230 ईस्वी के बीच का एक सफल मसीही लेखक था। उसने लैटिन शब्द *ट्रिनिटास* का प्रयोग बाइबल की उन शिक्षाओं का उल्लेख करने के लिए और उन्हें प्रचलित बनाने के लिए

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

किया कि परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में अस्तित्व में है। *ट्रिनिटास* का अनुवाद "तीन" या "त्रय" के रूप में किया जा सकता है। परंतु जब यह परमेश्वरत्व का उल्लेख करता है तो हम इसका अनुवाद "त्रिएकता" के रूप में करते हैं।

टरटूलियन ने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के अलग-अलग व्यक्तित्वों का उल्लेख करने के लिए लैटिन शब्द *परसोना* का प्रयोग भी किया, जिसका अनुवाद हम "व्यक्तित्व" के रूप में करते हैं। और उसने परमेश्वर के अस्तित्व, जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक साथ रखते हैं, का उल्लेख करने के लिए लैटिन शब्द *सबस्टांशिया,* अर्थात् "तत्व" या "सार" का प्रयोग किया। इसी लिए त्रिएकता की पारंपरिक परिभाषा यह कहती है :

> परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व हैं, परंतु केवल एक सार है।

निस्संदेह, कलीसिया ने त्रिएकता की इस समझ को बिना कठिनाई के नहीं सिखाया। और इस परिभाषा के निष्कर्ष तक पहुँचानेवाले विचार-विमर्श में पवित्र आत्मा अक्सर विवाद के केंद्र में रहता था। चौथी सदी के सेबास्टे के धर्मविज्ञानी यूस्टाथियस जैसे कुछ लोग थे जिन्होंने त्रुटिपूर्ण रूप से यह माना था कि पवित्र आत्मा न तो स्व-अस्तित्व परमेश्वर और न ही सृजित प्राणी था। और यहाँ तक कि कलीसिया के विश्वास-कथनों ने भी पर्याप्त विवरण प्रदान नहीं किए जिसकी पुष्टि करने की अपेक्षा सब मसीहियों से की गई हो। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के विश्वास-कथन ने केवल यह कहा, "मैं पवित्र आत्मा पर विश्वास करता हूँ।" और 325 ईस्वी में नीसीया की पहली परिषद् के द्वारा लिखित मूल नाईसीन विश्वास-कथन ने केवल यह कहा, "हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं।"

स्पष्टता की इस कमी के फलस्वरूप त्रिएकता की धर्मशिक्षा के विवरणों से संबंधित कई विवाद थे। वास्तव में, यह रोमी सम्राट कांस्टेंटियस द्वितीय के शासनकाल में, और उसकी मृत्यु के बाद थोड़े समय के लिए इतना पेचीदा हो गया कि कलीसिया में बहुत से लोगों ने त्रिएकता की शिक्षा को कम से कम उस रूप में ठुकरा दिया जिससे हम आज अवगत हैं। 351 ईस्वी में सर्मियम की दूसरी परिषद् और 357 ईस्वी में सर्मियम की तीसरी परिषद् ने उसकी पुष्टि की जिसे "एरियनवादी झूठी शिक्षा" कहा जाता है। इस शिक्षा ने परमेश्वरत्व में पुत्र की पूर्ण सदस्यता का इनकार किया और इस बात से भी इनकार किया कि पुत्र का तत्व या सार वैसा ही था जैसा पिता का था। इतिहास के इस समय के दौरान कलीसिया के कई भागों ने त्रिएकता की उसी धर्मशिक्षा को मोटे तौर पर ठुकरा दिया जिसे उन्होंने पहले बाइबल की शिक्षा के रूप में ग्रहण किया था।

अब जबकि हमने प्रेरितों के विश्वास-कथन से लेकर त्रिएकता की धर्मशिक्षा की आरंभिक औपचारिकता तक कलीसियाई इतिहास में न्यूमैटोलोजी पर विचार-विमर्श कर लिया है, इसलिए आइए हम नाईसीन विश्वास-कथन की ओर मुड़ें।

नाईसीन विश्वास-कथन

जैसा कि हम कह चुके हैं, 325 ईस्वी में लिखित मूल नाईसीन विश्वास-कथन ने पवित्र आत्मा के विषय में बहुत कम बात की। परंतु उन विवादों के प्रकाश में जो उठ खड़े हुए, त्रिएकता के विषय में उठे सवालों पर चर्चा करने और उन्हें सुलझाने के लिए एक और परिषद् का आयोजन किया गया। 381 ईस्वी में कोंस्टेंटिनोपल की पहली परिषद् का आयोजन हुआ। उन्होंने एरियनवादी झूठी शिक्षाओं को ठुकरा दिया और त्रिएकता के विषय में नाईसीन समझ का समर्थन किया। उन्होंने नाईसीन विश्वास-कथन को संशोधित और स्पष्ट भी किया ताकि इसकी एरियनवादी और अन्य लोगों के द्वारा फिर पुष्टि न की जा सके जिन्होंने परमेश्वर के तीन अलग-अलग और असृजित व्यक्तित्वों के एक सार के रूप में अनंत अस्तित्व का

इनकार कर दिया था। पवित्र आत्मा के विषय में नाईसीन विश्वास-कथन को इस प्रकार विस्तृत किया गया :

> हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं, जो प्रभु और जीवन का दाता है, जो पिता की ओर से आता है, जो पिता और पुत्र के साथ आराधना और महिमा को प्राप्त करता है, जिसने भविष्यवक्ता के द्वारा बात की।

विश्वास-कथन के इस संस्करण को कई बार मूल नाईसीन विश्वास-कथन से अलग रखने के लिए नाईसीन-कोंस्टेंटिनोपल विश्वास-कथन भी कहा जाता है।

यह संभव है कि पवित्र आत्मा पर दिए इस विस्तृत बल की प्रेरणा, कम से कम इस भाग में, कैसरिया के बासिल के लेखन से ली गई हो, जो 330–379 ईस्वी के दौरान रहा था। *डी स्पिरिटू सैंक्टो* या *ओन दी होली स्पिरिट* नामक बासिल की पुस्तक यूस्टाथियस जैसे लोगों की धारणाओं का खंडन करने में बहुत प्रभावशाली थी, जिन्होंने पवित्र आत्मा के पूर्ण ईश्वरत्व को मानने से इनकार कर दिया था। बासिल ने यह तर्क भी दिया कि क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वर है इसलिए वह आराधना प्राप्त करने के योग्य है। नाईसीन विश्वास-कथन में आत्मा के विस्तृत उल्लेखों ने ही आराधना के एक रूप की रचना की, जब विश्वास-कथन कलीसिया की आराधना-पद्धति का भाग बन गया। परंतु उन्होंने कलीसिया को अपनी शेष प्रार्थना-पद्धति और प्रार्थनाओं में आत्मा की आराधना पर और अधिक विकसित रूप में ध्यान देने में अगुवाई करने में सहायता की।

> चौथी सदी में पवित्र आत्मा की आराधना के विषय में एक रोचक विवाद हुआ। अपनी पुस्तक *ओन दी होली स्पिरिट* में कैसरिया का बासिल हमें बताता है कि कलीसिया में दो आराधना-पद्धतियों का प्रयोग किया जा रहा था। पहली आराधना-पद्धति आत्मा में पुत्र के द्वारा पिता की स्तुति की थी। दूसरी आराधना-पद्धति आत्मा के साथ मिलकर पुत्र के साथ पिता की स्तुति की थी। जो अपने प्रशिक्षण में एरियनवादी थे उन्होंने इस आराधना-पद्धति पर आपत्ति जताई क्योंकि उन्होंने वास्तव में पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व पर विश्वास नहीं किया था। परंतु यदि, जैसे कि पवित्रशास्त्र सिखाता है, हमारे पास इस बात पर विश्वास करने का अच्छा कारण हो कि पवित्र आत्मा ईश्वरीय है, तो यह उचित है कि हम उसे अपनी आराधना, महिमा में अभिव्यक्त करें और उसके सच्चे स्वभाव की स्तुति करें।
>
> — डॉ. कीथ जॉनसन

यहाँ तक, हमने प्रेरितों के विश्वास-कथन, त्रिएकता की औपचारिक धर्मशिक्षा, और नाईसीन विश्वास-कथन के आधार पर आरंभिक कलीसियाई इतिहास में न्यूमैटोलोजी के विकास पर चर्चा की है। आइए अब हम त्रिएकता की सत्ता मीमांसा और उसके विधान के बीच के अंतर संबोधित करें।

सत्ता मीमांसा और विधान

जैसे-जैसे कलीसियाई इतिहास आगे बढ़ा, धर्मविज्ञानियों ने अंततः त्रिएकता को दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से समझा। उन्होंने सत्व-संबंधी त्रिएकता और विधान-संबंधी त्रिएकता दोनों के बारे में बात करना आरंभ किया।

शब्द “सत्व-संबंधी” अस्तित्व का उल्लेख करता है। इसलिए धर्मवैज्ञानिक शब्द “सत्व-संबंधी त्रिएकता” का संबंध त्रिएकता के भीतर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के अस्तित्व से है। इस दृष्टिकोण से

तो पवित्र आत्मा अधिकार और महिमा में पिता और पुत्र के समान है। और उसमें उनके समान परमेश्वर के सारे ईश्वरीय गुण हैं। जिस प्रकार वेस्टमिंस्टर लघु प्रश्नोत्तरी का प्रश्न और उत्तर 4 दर्शाता है, तीनों व्यक्तित्व अपने "अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ्य, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य में असीमित, अनंत और अपरिवर्तनीय हैं।"

आपको याद होगा कि नाईसीन विश्वास-कथन का नाईसीन-कोंस्टेंटिनोपल संस्करण यह कहता है :

> हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं, जो प्रभु और जीवन का दाता है, जो पिता की ओर से आता है।

पश्चिमी कलीसिया ने बाद में विश्वास-कथन के इस लैटिन संस्करण का विस्तार करके इस वाक्यांश के अंत में शब्द *फिलोके* को जोड़ा, जिसका अर्थ है "और पुत्र।" अतः पश्चिमी देशों की अधिकाँश कलीसियाएँ अब एक ऐसे संस्करण का प्रयोग करती हैं जो कहता है कि पवित्र आत्मा "पिता से *और पुत्र से* आता है।"

कुछ लोगों ने पवित्र आत्मा के आने को सत्व-संबंधी रूप में समझा है। जिसका अर्थ है कि वे मानते हैं कि आत्मा का व्यक्तित्व पिता से या फिर पिता और पुत्र से अनंत रूप से "निकला है।" परंतु अन्य लोगों ने आत्मा के आने को विधान-संबंधी त्रिएकता के कार्य के रूप में समझा है।

धर्मवैज्ञानिक शब्द "विधान-संबंधी त्रिएकता" यह दर्शाता है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक दूसरे से कैसे परस्पर व्यवहार करते हैं, विशेषकर सृष्टि के संबंध में। इस दृष्टिकोण से, प्रत्येक के पास अलग-अलग भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ हैं, और यहाँ तक कि अलग-अलग अधिकार भी हैं।

पवित्रशास्त्र के बहुत से भाग सुझाव देते हैं कि पवित्र आत्मा अपनी इच्छा से पिता और पुत्र की सेवा करता है। उदाहरण के लिए, उसे पिता और पुत्र के द्वारा भेजा या "दिया" गया था। पवित्रशास्त्र यह बात लूका 11:13, यूहन्ना 14:26 और 15:26, तथा प्रेरितों के काम 2:33 जैसे अनुच्छेदों में सिखाता है। और जब वह आता है तो आत्मा उस कार्य को करने के द्वारा पिता और पुत्र की आज्ञा मानता है जिसके लिए उन्होंने उसे भेजा है। हम इस बात को यूहन्ना 16:13, रोमियों 8:11, और 1 पतरस 1:2 जैसे स्थानों में देखते हैं।

इन जैसे अनुच्छेदों के कारण बहुत से धर्मविज्ञानी कहते हैं कि विधान-संबंधी त्रिएकता के भीतर पिता और पुत्र के पास पवित्र आत्मा से अधिक अधिकार है। फिर भी, इस बात पर बल देना महत्वपूर्ण है कि आत्मा अब भी पूर्ण परमेश्वर है, और कि अधिकार की यह संरचना इसलिए है क्योंकि वे सब ऐसा चाहते हैं और इस पर एकमत हैं। अतः पवित्र आत्मा किसी भी तरह से पिता और पुत्र से कम नहीं है।

> सत्व-संबंधी त्रिएकता और विधान-संबंधी त्रिएकता के बीच भिन्नता को पहचानना महत्वपूर्ण है। धर्मविज्ञानियों के द्वारा बनाई गई यह भिन्नता बहुत उपयोगी है, और जब हम त्रिएकता की धर्मशिक्षा का अध्ययन करते हैं तो यह बहुत से असमंजस को दूर करने में सहायता करता है। जब हम सत्व-संबंधी त्रिएकता के बारे में बात करते हैं तो हम उसके स्वभाव का उल्लेख करते हैं। हम इस सच्चाई के बारे में बात करते हैं कि त्रिएकता के तीनों व्यक्तित्व — पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा — सत्व, सामर्थ्य और महिमा में एक समान हैं। निस्संदेह इस विषय में कोई एक दूसरे से बड़ा नहीं है। पिता परमेश्वर है। पुत्र परमेश्वर है। पवित्र आत्मा परमेश्वर है। हम इसे ऐसे भी कह सकते हैं : पिता सौ प्रतिशत परमेश्वर है; पुत्र सौ प्रतिशत परमेश्वर है; पवित्र आत्मा सौ प्रतिशत परमेश्वर है। परंतु बात जब उनकी भूमिकाओं की, भूमिकाओं के विभाजन की होती है, तब हम विधान-संबंधी त्रिएकता के बारे

> में बात करते हैं। इससे हमारा अर्थ यह है कि बाइबल हमें सिखाती है कि तीनों व्यक्तित्व, जैसा कि हमने कहा है, सत्व, सामर्थ्य और महिमा में समान होने के बावजूद भी जब बात उनके विभिन्न कार्यों और भूमिकाओं की आती है तो हम पवित्रशास्त्र में देखते हैं कि पिता की भूमिका उद्धार देने में है, वही है जो उद्धार देने का निर्णय करता है। पुत्र हमारे लिए अपने प्राणों को देकर छुटकारे के कार्य को पूरा करता है, और पवित्र आत्मा वह है जो छुटकारे के कार्य को लागू करता है। जब हम विधान-संबंधी त्रिएकता के बारे में बात करते हैं, तो हम देखते हैं कि वहाँ पुत्र, पिता के अधीन है, और पवित्र आत्मा, पुत्र और पिता के अधीन है। इसका अर्थ यह नहीं है कि पुत्र सत्व-संबंधी भाव में पिता से कुछ कम है, या पवित्र आत्मा उस भाव में कम है, बल्कि हम कह सकते हैं कि पारस्परिक सहमति के द्वारा वे पिता के अधिकार के प्रति अपनी इच्छा से समर्पित होते हैं।
>
> — डॉ. डेविड कोरेआ, अनुवाद

पवित्र आत्मा की धर्मशिक्षा को औपचारिक रूप देने में सदियाँ लग गईं। परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि कलीसिया ने कभी न्यूमैटोलोजी की महत्वपूर्ण बातों पर विश्वास नहीं किया। आख़िरकार, सब समयों की कलीसिया ने पवित्रशास्त्र को स्वीकार किया है। और पवित्रशास्त्र स्पष्टता से सिखाता है कि पवित्र आत्मा पूर्ण ईश्वरीय व्यक्तित्व है — वह परमेश्वरत्व का समान सदस्य है। सच यह है कि न्यूमैटोलोजी को औपचारिक रूप कई चरणों में दिया गया, और सामान्यतः किसी न किसी झूठी शिक्षा के प्रत्युत्तर में। धर्मविज्ञानियों को एहसास हुआ कि उन्हें और अधिक विवरण प्रदान करने की, तथा और अधिक स्पष्ट रूप से संवाद करने की आवश्यकता है ताकि वे दूसरों को गलती करने से रोक सकें। और ये सूत्रीकरण समय की हर परख में खरे उतरे हैं। सदियों से कलीसिया की लगभग सब शाखाओं ने त्रिएकता में पवित्र आत्मा की भूमिका की इन्हीं मान्यताओं की पुष्टि की है।

उपसंहार

त्रिएकता में पवित्र आत्मा पर आधारित इस अध्याय में हमने देखा है कि कैसे पुराना नियम ईश्वरत्व और व्यक्तित्व के संबंध में परमेश्वर के आत्मा के बारे में बात करता है। हमने देखा है कि कैसे यीशु और उसके प्रेरितों के अधीन नए नियम में इस समझ को विस्तृत किया गया। और हमने प्रेरितों के विश्वास-कथन, त्रिएकता की धर्मशिक्षा को औपचारिक रूप दिए जाने, नाईसीन विश्वास-कथन और त्रिएकता-संबंधी सत्ता मीमांसा और विधान पर चर्चा करने के द्वारा कलीसियाई इतिहास में न्यूमैटोलोजी का सर्वेक्षण किया है।

यह समझ लेना कि त्रिएकता में पवित्र आत्मा कौन है, हमारे जीवनों में उसके कार्य को समझने का एक महत्वपूर्ण भाग है। जैसे कि हम आगे के अध्यायों में देखेंगे, पवित्र आत्मा पिता और पुत्र से भी अधिक हमारे साथ व्यक्तिगत रूप से सहभागी होता है। वह हमारे भीतर वास करता है। हम आत्मिक सामर्थ्य के लिए, जब हम पाप करते हैं तो परमेश्वर की क्षमा का अनुभव करने के लिए, पवित्रता में बढ़ने के लिए, विश्वास में स्थिर रहने के लिए, ऐसे वरदानों को पाने के लिए जो हमें दूसरों के प्रति सेवकाई करने में सहायता करते है, तथा अन्य बहुत सी आशीषों के लिए उस पर निर्भर होते हैं। और यह जान लेना कि जो हमारे भीतर वास करता है वह व्यक्तिगत है, तथा हमारे पिता, और हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता का

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

ईश्वरीय आत्मा है, तो यह हमें उसकी सेवकाई को महत्वपूर्ण जानने और हमारे जीवनों में उसके द्वारा किए जानेवाले कार्य के साथ सहयोग करने में सहायता करता है।